Impact Factor (QJIF): 8.47 E-ISSN: 2583-1615, P-ISSN: 3049-3498

International Journal of Research in Academic World

Received: 10/January/2026 **IJRAW:** 2026; 5(2):43-45 **Accepted:** 12/February/2026

हिन्दी ओर प्रवासी साहित्य की प्रांसगिकता

*[1]डॉ. मंजू भट्ट

*[1]सहा–प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, डॉ. सी. व्ही. रमन वि. वि., करगी रोड, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश

हिन्दी साहित्य का स्वरूप समय के साथ निरंतर परिवर्तित होता रहा है। जैसे–जैसे समाज की संरचना बदली, वैसे–वैसे साहित्य की संवेदना, विषयवस्तु और दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आया। आधुनिक युग में यह परिवर्तन सबसे अधिक प्रवासन की प्रक्रिया के कारण दृष्टिगोचर होता है। भारत से बाहर बसे हिंदीभाषी लेखकों द्वारा रचित साहित्य ने हिंदी साहित्य को एक नई दिशा और व्यापक वैश्विक फलक प्रदान किया है। यही साहित्य ''प्रवासी हिन्दी साहित्य'' के नाम से जाना जाता है। प्रवासी साहित्य केवल भौगोलिक विस्थापन की कथा नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक, मानसिक और भावनात्मक विस्थापन का भी साहित्य है। इसमें व्यक्ति की आंतरिक पीड़ा, स्मृतियाँ, अस्मिता बोध और सामार्ग हैं। इस प्रकार हिन्दी और प्रवासी सामाजिक संघर्ष गहराई से अभिव्यक्त होते जाती है। प्रवासी हिन्दी साहित्य वह साहित्य है जिसकी रचना भारत से बाहर बसे हिन्दी लेखकों द्वारा की गई प्रवासी साहित्य की प्रासंगिकता समकालीन वैश्विक संदर्भों में अत्यंत महत्वपूर्ण हो हो या जिसमें प्रवासी जीवन की अनुभूतियाँ केंद्रीय रूप में उपस्थित हों। इसका स्वरूप बहुस्तरीय है, क्योंकि इसमें दो संस्कृतियों, दो समाजों और दो जीवन–दृष्टियों का समन्वय देखने को मिलता है। प्रवासी लेखक एक ओर अपनी मातृभूमि की स्मृतियों से जुड़ा होता है, तो दूसरी ओर उसे नए देश की परिस्थितियों में स्वयं को ढालना पड़ता है। इस द्वंद्व से जो साहित्य जन्म लेता है, वह भावनात्मक रूप से अत्यंत गहन और विचारात्मक रूप से समृद्ध होता है। प्रवासी जीवन का सबसे जटिल पक्ष अस्मिता का संकट है। विदेशी भूमि पर व्यक्ति न तो पूरी तरह वहाँ का हो पाता है और न ही अपने देश का रह जाता है। यह द्वंद्व उसकी मानसिक स्थिति को प्रभावित करता है। यह आत्मसंघर्ष प्रवासी साहित्य को गहराई और गंभीरता प्रदान करता है। यह साहित्य व्यक्ति के आंतरिक संघर्षों का सशक्त दस्तावेज़ बन जाता है।

मुख्य शब्दः वैश्वीकरण, प्रवासी, सांस्कृतिक, अस्मिता–बोध, आत्मसंघर्ष, अभिव्यक्त, दृष्टिकोण।

1. प्रस्तावना

प्रवासी परिस्थितियों में हिन्दी भाषा का संरक्षण एक बड़ी चुनौती है। विदेशी समाज में रहते हुए मातृभाषा का प्रयोग सीमित हो जाता है, किंतु प्रवासी साहित्य इस संकट के विरुद्ध एक सशक्त प्रयास है। प्रवासी लेखक हिन्दी में लिखकर न केवल अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करता है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भाषा की धरोहर को सुरक्षित भी करता है। इस प्रकार प्रवासी साहित्य हिंदी भाषा के अस्तित्व और विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भाषा और साहित्य किसी भी समाज की सांस्कृतिक चेतना, ऐतिहासिक स्मृति और सामूहिक अनुभवों का सशक्त माध्यम होते हैं। हिन्दी भाषा, जो भारत की बहुसंख्यक जनता की अभिव्यक्ति का साधन रही है, समय के साथ केवल एक राष्ट्रीय भाषा न रहकर एक वैश्विक भाषा के रूप में विकसित हुई है। इस विकास में जिन कारकों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है, उनमें प्रवासन एक केंद्रीय तत्व है। भारतीयों का विश्व के विभिन्न देशों में बसना केवल भौगोलिक स्थानांतरण की प्रक्रिया नहीं थी, बल्कि इसके साथ भाषा, संस्कृति, परंपरा और संवेदना का भी प्रवासन हुआ। इसी सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से प्रवासी हिन्दी साहित्य का जन्म हुआ। प्रवासी साहित्य उस मानसिक, भावनात्मक और सांस्कृतिक अनुभव की अभिव्यक्ति है, जो मातृभूमि से दूर रहते हुए व्यक्ति के भीतर निरंतर घटित होता रहता है।

***Corresponding Author:** डॉ. मंजू भट्ट

यह साहित्य विस्थापन की पीड़ा, जड़ों से जुड़े रहने की आकांक्षा, नई
संस्कृति में सामंजस्य की चुनौती और पहचान के संघर्ष को अभिव्यक्त करता है। हिन्दी प्रवासी साहित्य इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है कि यह हिन्दी साहित्य को एक सीमित भौगोलिक दायरे से निकालकर वैश्विक संदर्भों से जोड़ता है।

2. प्रवासी साहित्य में डिजिटल युग

डिजिटल युग ने साहित्य की सर्जना, प्रकाशन और प्रसार की प्रक्रिया में क्रांतिकारी परिवर्तन किया है। विशेष रूप से प्रवासी साहित्य के संदर्भ में डिजिटल माध्यमों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और निर्णायक सिद्ध हुई है। भौगोलिक दूरी, प्रकाशन की सीमाएँ और भाषा के सीमित पाठक जो पहले प्रवासी लेखकों के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ थीं डिजिटल तकनीक के आगमन के साथ काफी हद तक समाप्त हो गई हैं। आज प्रवासी हिन्दी साहित्य डिजिटल मंचों के माध्यम से वैश्विक स्तर पर नई पहचान प्राप्त कर रहा है।

3. डिजिटल माध्यम और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

डिजिटल युग ने प्रवासी लेखकों को अभिव्यक्ति की अभूतपूर्व स्वतंत्रता प्रदान की है। ब्लॉग, वेबसाइट, ई–पत्रिकाएँ, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और ऑनलाइन साहित्यिक मंचों ने लेखकों को बिना किसी संस्थागत बाधा के अपनी रचनाएँ प्रस्तुत करने का अवसर दिया है। इससे प्रवासी साहित्य अधिक लोकतांत्रिक और समावेशी बना है। पहले जहाँ प्रवासी लेखकों को भारत में प्रकाशित पत्रिकाओं या सीमित विदेशी मंचों पर निर्भर रहना पड़ता था, वहीं अब वे स्वयं अपने डिजिटल मंच स्थापित कर सकते हैं। इससे उनकी रचनात्मक स्वायत्तता बढ़ी है।

4. ई–पत्रिकाएँ और ऑनलाइन साहित्यिक मंच

डिजिटल युग में अनेक हिन्दी ई–पत्रिकाएँ और वेब पोर्टल्स अस्तित्व में आए हैं, जिन्होंने प्रवासी साहित्य को विशेष स्थान दिया है। ये मंच प्रवासी लेखकों की रचनाओं को नियमित रूप से प्रकाशित करते हैं और उन्हें व्यापक पाठक वर्ग प्रदान करते हैं। ई–पत्रिकाओं के माध्यम से कहानी, कविता, निबंध, आलोचना और आत्मकथा जैसी विधाओं में निरंतर सृजन हो रहा है। इससे प्रवासी साहित्य की निरंतरता और गुणवत्ता दोनों बनी हुई हैं।

5. सोशल मीडिया और प्रवासी साहित्य

फेसबुक, व्हाट्सएप, एक्स (ट्विटर), इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसे सोशल मीडिया मंचों ने प्रवासी साहित्य के स्वरूप को भी प्रभावित किया है। लघु कविता, माइक्रो–फिक्शन, संस्मरण और विचारात्मक लेखन जैसे नए रूप सामने आए हैं। सोशल मीडिया ने लेखक और पाठक के बीच की दूरी को समाप्त कर दिया है। तत्काल प्रतिक्रिया और संवाद की सुविधा ने साहित्यिक चेतना को अधिक जीवंत बनाया है।

6. नई पीढ़ी और भाषा–संरक्षण

साहित्य को समकालीन और प्रासंगिक बनाता है। भाषा के प्रति पुनः रुचि जागृत की है। ऑनलाइन कक्षाएँ, ई–पुस्तकें ऑडियो–बुक्स और हिन्दी साहित्य के वीडियो कंटेंट ने युवाओं को हिंदी से जोड़े रखा है। इस प्रकार डिजिटल युगप्रवासी साहित्य के माध्यम से प्रवासी समाज की नई पीढ़ी मातृभाषा से धीरे–धीरे दर होती जा रही थी कि डिजिटल माध्यमों ने हिंदी भाषा–संरक्षण का भी महत्वपूर्ण साधन बन गया है। डिजिटल युग ने प्रवासी साहित्य की विषयवस्तु और शिल्प में भी विविधता लाई है। अब साहित्य में केवल स्मृति और पीडा ही नहीं, बल्कि तकनीकी जीवन वैश्विक नागरिकता, आभासी संबंध और डिजिटल पहचान जैसे नए विषय भी शामिल हो गए हैं। यह परिवर्तन प्रवासी

7. प्रवासी साहित्य की चुनौतियाँ और सीमाएँ

प्रवासी हिन्दी साहित्य ने हिन्दी साहित्य को वैश्विक विस्तार, जुड़ी हई हैं। किसी भी साहित्यिक धारा की तरह प्रवासी साहित्य का विकास भी संघर्षों बाधाओं और प्रश्नों से बहुसांस्कृतिक हर और नई संवेदनाएँ प्रदान की हैं, किंतु इसके साथ साथ अनेक चनोतियाँ और सीमाएँ भी होकर हुआ है। इन चुनौतियों को समझे बिना प्रवासी साहित्य की समय आलोचना संभव नहीं है प्रवासी साहित्य की सबसे बड़ी चुनौती हिन्दी भाषा का संरक्षण है। विदेशी परिवेश में रहते हुए दैनिक जीवन में हिन्दी का प्रयोग सीमित हो जाता है। नई पीढ़ी अंग्रेजी या स्थानीय भाषा में अधिक सहज होती है. जिसके कारण हिंदी धीरे–धीरे पारिवारिक और सांस्कृतिक दायरे तक सिमट जाती है। इस स्थिति में प्रवासी लेखक के सामने यह प्रश्न खड़ा होता है कि वह किस भाषा में लिखे मातृभाषा हिंदी में था उस भाषा में, जो उसके आसपास प्रचलित है। हिन्दी में लेखन करने पर पाठक सीमित हो जाते हैं. जबकि विदेशी भाषा में लिखने पर सांस्कृतिक आत्मीयता का क्षरण होने लगता है।

8. उपसंहार

हिन्दी और प्रवासी साहित्य की प्रासंगिकता आज के वैश्विक यग में अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह साहित्य हिन्दी भाषा को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने के साथ–साथ मानवीय संवेदनाओं, सांस्कृतिक संवाद और वैश्विक सहअस्तित्व को सुदृढ़ करता है। प्रवासी साहित्य हिन्दी साहित्य को नई दृष्टि नई संवेदना और नया का दस्तावेज़ है, बल्कि वर्तमान विस्तार प्रदान करता है। प्रवासी हिंदी साहित्य न केवल अतीत की स्मृतियों का व स्थापित हो चुका है। कि हिन्दी साहित्य की समग्र समझ प्रवासी साहित्य के अध्ययन के बिना अधरी है। समग्र रूप से देखा जाए की जटिलताओं और भविष्य की संभावनाओं का सृजनात्मक प्रतिबिंब भी है। इसलिए यह कहा जा सकता है तो हिन्दी और प्रवासी साहित्य आधुनिक हिंदी

साहित्य की एक सशक्त, जीवंत और अनिवार्य धारा के रूप में मानसिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक संघर्षों का गहन दस्तावेज है। प्रवासी साहित्य के माध्यम से हिन्दी उका है। यह साहित्य केवल भौगोलिक विस्थापन की कथा नहीं है. बल्कि यह व्यक्ति के साहित्य ने न केवल अपनी विषयवस्तु का विस्तार किया है, बल्कि अपनी दृष्टि को भी राष्ट्रीय सीमाओं से आगे बढ़ाकर वैश्विक स्तर तक पहुंचाया है। भाषा किसी एक भूखंड की संपत्ति नहीं होती. बल्कि वह संवेदनाओं प्रति गहरे के स्मृतियों और सांस्कृतिक चेतना की वाहक होती है। विदेशों में रहते हए भी हिन्दी में सुजन करना भाषा के साहित्य प्रवासी जीवन की जटिलताओं जैसे अस्मिता का संकट, सांस्कृतिक द्वंद्व, पीढ़ीगत अंतर, नस्लीय संरक्षण और संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है तथा उसे अंतरराष्ट्रीय पहचान प्रदान करता है। यह भेदभाव और अकेलेपन को न केवल अभिव्यक्त करता है, बल्कि उनके सामाजिक और मानवीय आयाम रूप ले लेती है को भी उजागर करता है। प्रवासी साहित्य में व्यक्ति की निजी पीड़ा सामूहिक अनुभव का रूप जिससे यह साहित्य केवल आत्मकथात्मक न रहकर व्यापक मानवीय संदर्भ प्राप्त करता है।

संदर्भ ग्रन्थो सूची

1. अनत, अभिमन्यु – प्रवासी साहित्यः संवेदना और यथार्थ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. शर्मा, तेजेन्द्र – प्रवासी कहानीः अनुभव और अभिव्यक्ति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. मिश्र, सुदेश – प्रवासी हिंदी साहित्यः पहचान और अस्मिता, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।
4. सिंह, कमल किशोर – हिन्दी का प्रवासी साहित्य, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।
5. यादव, राजेन्द्र – साहित्य और प्रवासन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. शुक्ल, रामचंद्र – हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
7. द्विवेदी, हजारीप्रसाद – साहित्य का समाजशास्त्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
8. नगेन्द्र –आधुनिक हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
9. वर्मा, नामवर सिंह – दूसरी परंपरा की खोज, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।